कहानी

पुनरावृत्ति

शोभा गोयल

नीना ने आज अपनी कुछ सहेलियों को लंच पर इनवाइट किया. उसने एक पंथ दो काज वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए मौके का फायदा उठाया. बहुत दिन से पार्टी मांगने वाली सखियों के साथ गेट- टुगेदर हो जाएगा और उसकी नई नवेली बहू से सब मिल भी लेंगे.

बहू नम्रता देखने में चांद का टुकड़ा थी. ? जो भी देखता उसकी खूबसूरती की तारीफ करते नहीं थकता था. नीना के बेटे ने नम्रता के रंग-रूप के आगे स्टेटस, क्लास मैच न होना, विजातीय होना जैसी बाधा को दरकिनार कर दिया था. अमित ने अपने दोस्त के जन्मदिन की पार्टी में नम्रता को देखा और देखता ही रह गया. वह जिद पर अड़ गया. वह शादी करेगा तो केवल नम्रता से ही जबकि उसके माता-पिता ने उसके लिए एक से बढ़कर एक रिश्ते देख रखे थे.एक से तो मंगनी करने का मन बना चुके थे. उन्होंने काफी तर्क-वितर्क किये मगर अमित नहीं माना. अंत में उन्हें अपनी बेटे की जिद के आगे झुकना पड़ा.

नम्रता उच्च शिक्षित, गुणी एवं संस्कारी लड़की थी. आते ही वह घर में रच-बस गई. अपने मधुर और नम्र व्यवहार से सब का दिल जीत लिया. घर में ढेर सारे नौकर होने के बावजूद वह छोटे-छोटे कामों को स्वयं करना पसंद करती. उसे अपनी पढ़ाई-लिखाई का कतई घमंड नहीं था.

आज भी नम्रता सुबह से रसोई में व्यस्त है. सास की सहेलियों की खातिरदारी में कोई कमी ना रह जाए वह इस बात का पूरा ख्याल रख रही थी. उसने खाने में खूब सारी वैरायटी बनाई और डाइनिंग टेबल भी क्रिएटिव तरीके से सजायी.

नीना की सभी सहेलियां नम्रता से मिलकर बहुत खुश हुए. वे सब उसकी तारीफ करते हुए थक नहीं रही थी. खाने से लेकर के उसके रहने-सहने का सलीका सबको बेहद पसंद आया. वहीं नीना पूरे समय बुझी-बुझी सी रही. वह सब के साथ ऊपर से हंस-बोल रही थी मगर अंदर ही अंदर उद्वेलित हो रही थी. उसका खून खौल रहा था.

सबके जाने के बाद उसने नम्रता को अपने पास बिठाया और पूछने लगी - नम्रता यह गाल पर निशान कैसा ?

सायास ही नम्रता का हाथ गाल पर चला गया और उसकी आंखें नम हो गई. वह चुप रही. सुबह छोटी सी कहासुनी ने झगड़े का रुप धारण किया और अमित ने गुस्से में.

नम्रता !! बताओ क्या हुआ ? मैं तुम्हारी मां जैसी हूं. उसने नम्रता के सिर पर प्यार भरा हाथ रखा.

वो-वोज्एलर्जी हो गई है. नम्रता ने परदा रखना चाहा.

किससे ?

शायद कॉस्मेटिक प्रोडक्ट के कुछ ब्रांड एलर्जी कर गए.

देखो नम्रता मैं जानती हूं कि तुम झूठ बोल रही हो. यह कोई एलर्जी नहीं है. तुम अमित की करतुत छिपा रही हो. यह निशान किसी थप्पड़ का है और अमित ने गुस्से में तुम्हारे ऊपर हाथ.

नम्रता की नजरे झुक गई.

तुम्हें शर्मिंदा होने की जरूरत नहीं है. शर्मिंदा तो मुझे होना चाहिए जो अपने बेटे को सही संस्कार न दे सकी. उसे यह नहीं सिखा सकी कि औरत भी सम्मान का अधिकार रखती है. पत्नी साथी होती है, मित्र होती है, हमसफ़र होती है न कि कोई गुलाम. पत्नी के साथ समानता और गरिमा के साथ वही व्यवहार करना चाहिए जैसा वो खुद के लिए चाहता है. मै उसके गुस्से को अच्छी तरह जानती हूं.

मम्मीजी ! सब ठीक हो जाएगा. आप परेशान ना हो.

यही उम्मीद मै अमित के पापा से बरसों से करती आ रही हूं. आज तक कुछ ठीक नहीं हुआ है बल्कि मेरी चुप्पी ने उन्हें और बढ़ावा दिया है ?. वे दिन-ब-दिन इस बात के आदि होते गए कि मैं पंचिंग बैग हूं. मै कुछ नहीं कहुंगी. तर्क यह भी दिया है जो प्यार करता है वह गुस्सा कर भी ले तो क्या फर्क पड़ता है. जब मन हुआ तो प्यार कर लिया और जब गुस्सा आया तो बुरा-भला कहते हुए दो-चार लगा दिए. क्या है यह सब ?

क्या मेरा कोई आत्मसम्मान नहीं है. मेरी अपनी कोई वैल्यू नहीं है. उनके थप्पड़ से मेरी आत्मा छलनी हो जाती है और आत्मसम्मान आईने की भांति किरचों में बिखरकर रह जाता है. मैं पूछती हूं तुमसे, जो प्यार करता है वह ऐसी तकलीफ दे कैसे सकता है. नम्रता, तुम ठीक होने का इंतजार नहीं करना. तुम आज ही अमित से इस थप्पड़ का जवाब लेना.

मगर मम्मीजी अमित बहुत परेशान था और इसी परेशानी में..

तो इसका मतलब है वह घर में मारपीट करेगा. कल को तुम्हें किसी बात पर गुस्सा आ गया तो क्या तुम भी अमित के साथ वही व्यवहार करोगी जो उसने आज किया है.

नम्रता निरूत्तर थी.

घर बसाने और बचाने की जिम्मेदारी तुम्हारे अकेले की नहीं है. अमित को भी इस बात का एहसास दिलाना जरूरी है शादी रूपी गाड़ी को चलाने के लिए दोनों पहियों का होना जरूरी है. मैं नहीं चाहती कि बरसों से चली आ रही हाथ उठाने की परंपरा स्थाई हो जाए. अब यह जिम्मेदारी तुम्हारी है कि आज जो हुआ उसकी पुनरावृत्ती दोबारा न हो.

नम्रता सास के आगे नतमस्तक हो गई और उसने वादा किया कि वह अमित को महिलाओं की इज्जत करना सिखा कर ही दम लेगी. यदि नीना जैसी सास हर घर में हो तो कोई बहू कभी अपना चूल्हा- चौका अलग नहीं करेगी.

क्लास by बड़े भाई

खूबियां निखारनी होंगी

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

धरती की परतों के बीच बैठे एक हीरे की अकड़ यह विचार से चरम पर थी कि दुनिया उसके लिए तरसती है. उसका इतना मान है कि लोग उसको प्राप्त करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं. जिसके पास मैं होता हूं उसका बड़ा रुतबा बना देता हूँ . यह सब सोचकर हीरा फूला नहीं समा रहा था. उसका मन हुआ कि वह अब इन परतों से निकलकर सतह पर जाए और लोगों की उसके लिए दीवानगी का आनंद ले लेकिन इस इच्छा से कई दिनों तक चलकर धरती की सतह पर जब वह पहुंचा और फिर जो अनुभव हुआ उसने उसका भ्रम तोड़ा और जीवन बदल दिया.

धरती पर पहुंचकर वह लोगों को देखने लगा कि अब जैसे ही नज़र पड़ेगी, लोग उसके लिए पागल होने लगेंगे लेकिन हुआ इसके उलट. वो लोगों की आंखों को ताकता रह गया. लोगों ने ध्यान नहीं दिया बल्कि लोगों के पांव की ठोकरें खाता रहा . हीरा को ऐसी अपेक्षा नहीं थी, फिर तभी उसने देखा चमकते हीरे को जिसे लोग पहनकर इतरा रहे थे, उसकी जो कल्पना थी उसे वो चमकता हीरा जी रहा था. उसने उसे रोका, परिचय दिया और दुखी मन से बताया कि लोग उसे पहचान नहीं रहे, उसे बुरा लग रहा है. तब उस चमकते हीरा मुस्कुराकर चल दिया और चलते हुए दूर तक कहता गया-

तुम्हें चमकना होगा, तुम्हें चमकना होगा.

यह हीरा समझ चुका था कि अब उसे क्या करना है. उसे चमकना होगा. उसको अपनी खूबियों को सामने लाना होगा, इसके लिए उसे तपना होगा, स्वयं को तराशना होगा. उसने ऐसा ही किया और बेशकीमती हो गया..

कहना यह है कि आपके पास जो खूबी है वो बिना निखारे, बिना तराशे अपना जादू नहीं दिखा पाएगी.. बहुत लोग स्वयं की खूबियों पर मेहनत नहीं करते और फिर उस हीरे की तरह ठोकरें खाते हैं.बस यही कहना था, धन्यवाद..

मैने पंक्तियां लिखी थी -

जब सबने कर दिया इनकार
हीरे को पहचानने से,
तब उसने बर्बरता बर्दाश्त की,
तेज़ धारों की.

पुस्तक चर्चा

जीवन की सुन्दरता की मुनादी करती कविता

मनीष वैद्य

हैं अब भी कुछ ऐसी चीज़ें जो जीवन को सुंदर बनाती हैं

बाणवे बसंत देख चुके सतत सक्रिय कवि दुर्गाप्रसाद झाला के इस ताज़ातरीन संग्रह 'जो तुमको अर्थ दे' की ये पंक्तियाँ हमें आश्वस्ति ही नहीं देती, मुनादी भी करती हैं कि ऐसी कुछ चीज़ें तमाम कुसमय के बाद भी बची हैं और रहेंगी. यह भी कि जीवन की सुंदरता चाहने वाले कवि का यह मासूम भरोसा बना रहे तो एक दिन फिर से दुनिया निखर उठेगी.

कवि के जीवन में घुली सादगी जो अनायास उसकी कविताओं में उतर आती है, इनमें साफ़ झलकती है. हिन्दी कविता में रघुवीर सहाय,भवानीप्रसाद मिश्र, हरिनारायण व्यास की 'सादाबयानी' परम्परा से आते श्री झाला 'जो जैसा देखा, वैसा ही लिखने' में भरोसा रखते हैं. इन कविताओं में एक ख़ास तरह की सादगी है, जो कहीं से भी बनावटी और सायास नहीं है. दरअसल साधारण में असाधारण अर्थवत्ता देने का हुनर सरल नहीं, सबसे कठिन है. इन्हें पढ़ते हुए हम कवि के अंतर्मन से गुज़रते हैं तो विचारों में स्पष्ट कवि के मन की थाह मिलती है. किसी साधारण कथन से एक ख़ास तरह की असाधारण ध्वनि व्यंजित होती है कि हम अनायास विस्मित हो जाते हैं. और क्या कहें /हम तो /अपने आप से भी /डरे हुए हैं इसमें 'और क्या कहें' और 'अपने आप से डरना' कितनी सहजता से हमारे समाज का दृश्य जिस वीभत्स रूप में सामने लाता है, उससे इस कविता की असाधारण गूँज को समझा जा सकता है.

कवि के सात दशकों लंबे जीवनानुभवों और समय को देखने की समृद्ध कवि दृष्टि इन कविताओं में है, जो वर्तमान जीवन की चुनौतियों को बायपास नहीं करती, उन्हें शामिल कर बड़े सवाल खड़े करती हैं. ये दियासलाई की उन तीलियों की तरह है जो अपनी बनक में छोटी होने के बाद भी चिंगारी पैदा करने और उससे दावानल बना देने की सामर्थ्य रखती हैं. इनमें छोटे-छोटे प्रश्न हैं, प्रश्नचिन्हों की शक्ल में जैसे लहरें उठती हैं ! इनमें उस पूरे काल-खण्ड की गूँज-परछाइयाँ हैं. मानवीय चिन्ताएँ हैं और भविष्य के प्रति एक गहरी आश्वस्ति भी.

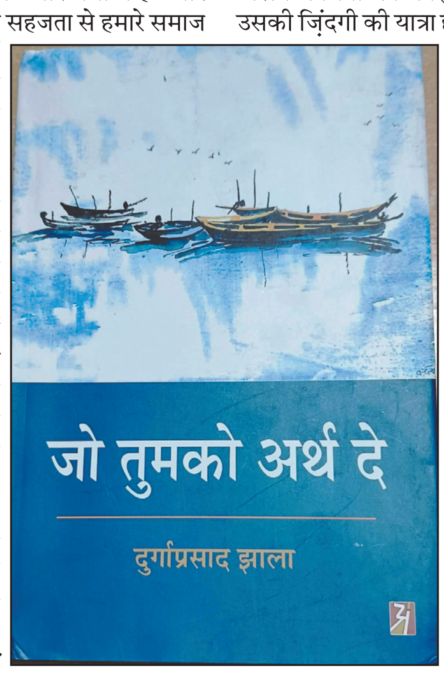

इनमें जीवन राग है. धड़कता हुआ-सा. कविता और जीवन अलग-अलग नहीं, एक ही हैं. कविता कोई अमूर्त सत्ता नहीं है. कविता की अर्थवत्ता के लिए दायित्व-चेतना अनिवार्य है. आदमी और आदमी से अलग कविता का कोई अर्थ नहीं है. आदमी और उसकी ज़िंदगी की यात्रा ही कविता है. यह अपने समय और धरती से जुड़ी हुई होते हुए भी अपनी निरंतर गति के क्रम में है. इनका विषय विस्तार बहुत दूर तक जाता है. छोटी-छोटी इन कविताओं में अपने समय और समाज को पकड़ने की जद्दोजहद है. 'हमें' कविता में वे लिखते हैं-हमें जीवन का रस /सबको पिलाना है.

मैं जिस कलम से/ लिखता हूँ / वह हर घर की दीवारों पर / प्रेम के / अक्षर लिखती है प्रेम को यहाँ कवि अलग ढंग से महसूस करता है. यहाँ प्रेम का दायरा काफ़ी बड़ी जगह में फैला हुआ है. इस प्रेम की परिधि में पूरी धरती ही शामिल है. मैं सब कुछ /खो दूँगा /पर प्रेम का मीठा फल/ बचाकर रखूँगा में कवि सब कुछ खोकर भी उस प्रेम को बचा लेना चाहता है, जो हमें जोड़ता है, ऊर्जा देता है, संवेदना जगाता है. जो पीढ़ियों से हमारे बीच सदानीरा रहा है. कुछ कविताओं में वे अपने तल्ख तेवर के साथ मौजूद हैं लेकिन ज़्यादातर कविताएँ उनकी तासीर के अनुरूप हौले से कान में कुछ कहते हुए गुज़र जाती है और हम देर तक उसकी खुशबू महसूस करते रह जाते हैं. शीर्षक कविता 'जो तुमको अर्थ दे' की पंक्तियाँ दीप जो /तुमको अर्थ दे/ उसको अपने अँधेरे में / जगमगाओ अनायास बड़े फ़लक पर कई-कई अर्थ देने लगती हैं तो इसकी गूँज पाठक के भीतर अटकी रह जाती है.

इन कविताओं में कई जगह नदी के बिम्ब आते हैं. लेकिन नदी के प्रति कवि पूरी तरह आश्वस्त है. यह नदी हमारे बीच के भरोसे की है, संवेदनाओं की है, मनुष्यता की है, सरल जीवन की है, जिसे वे ताज़ादम, सुंदर और सदानीरा देखना चाहते हैं. कवि का यह सपना एक नयी और बेहतर दुनिया के सपने से निकलता है और कविता अनायास बड़ी हो जाती है.

यह कवि का सपना है, प्रतिबद्धता और अपना दृढ निश्चय भी, जो वे अपनी तरह का समाज बुनना चाहते हैं. आज की कविता में यह और भी ज़रूरी हो जाता है, जबकि इस कठिनतम समय में संवेदनाओं से भरा समाज, जिसे हम क़रीब-क़रीब बिसरा चुके हैं. हमारी पारम्परिक दृष्टि और हमारा प्राचीन समाज इसी संवेदना को सामूहिकता में जीता रहा है लेकिन इधर के सालों में हमने उसे तेज़ी से उजाड़ लिया है. वे हमारे समाज को फिर से जोड़ना चाहते हैं. 'मुझे' कविता में उनकी पंक्तियाँ हैं- मुझे जीवन को /रागमयी बनाना है और मुझे हर मौसम को / वासन्ती बनाना है.'

जो तुमको अर्थ दे
(कविता संग्रह)
दुर्गाप्रसाद झाला
अंतिका प्रकाशन, गाज़ियाबाद
मूल्य-435 रुपए

शब्द बिरादरी सम्मान समारोह में सम्मानित हुए रचनाकार

आयोजन

लोकमाता स्टडी फाउंडेशन ने अपने साहित्यिक-सामाजिक उपक्रम शब्द बिरादरी की पहली वर्षगांठ के अवसर पर दिल्ली में सम्मान समारोह के आयोजन में 70 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें शिक्षाविद, गैर-सरकारी संगठनों के सदस्य, नागरिक समाज के प्रतिनिधि और छात्र शामिल थे. कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य उन उत्कृष्ट रचनाकारों को सम्मानित करना था, जिनकी कविताओं, कहानियों और लेखों ने शब्द बिरादरीको समृद्ध बनाया.

कार्यक्रम का संचालन संपादकीय टीम की डॉ. अनुराधा गुप्ता(संपादक) और डॉ. सत्यम् रवि द्विवेदी(सह-संपादक)ने किया. कार्यक्रम की शुरुआत विशिष्ट अतिथियों के सम्मान के साथ हुई, जिनमें मुख्य अतिथि के रूप में पवन कुमार अधीक्षक, विशेष अतिथि प्रो. उमापति दीक्षित अध्यक्ष, सायंकालीन पाठ्यक्रम, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा तथा राजकुमार सिंह संस्थापक मैट्रिक्स सोसायटी थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. कमलेश वर्मा अध्यक्ष, हिंदी विभाग, राजकीय बालिका महाविद्यालय, सेवापुरी, वाराणसी ने की.

निर्णायकों में प्रख्यात कथाकार भालचंद्र जोशी, प्रो. कमलेशवर्मा तथा कहानीकार सुश्री उपासना शामिल थे. जबकि सम्मानित रचनाकारों पर सुधांशु गुप्ता ने कहानी, प्रियंका भारद्वाज ने कविता और केशव चतुर्वेदी ने आलेख पर बात की. कहानी के लिए प्रीति प्रकाश को उनकी कहानी एन एक्स्ट्रा हेवी डे कविता के लिए प्रदीप सिंह तथा आलेख के लिए सत्यप्रकाश सिंह को उनके आलेख कबीर की कविता अर्थात व्यक्ति का समाज और समाज का व्यक्ति सन्दर्भ के लिए उन्हें प्रमाण पत्र तथा 11 हजार रूपए की राशि से सम्मानित किया गया. सुधांशु गुप्ता ने प्रीति प्रकाश की कहानी का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया और इसके प्रभावशाली नारीवादी दृष्टिकोण पर विशेष ध्यान खींचा. उन्होंने बताया कि यह कथा किस प्रकार पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के दैनिक संघर्षों और संस्थागत बाधाओं को उजागर करती है, और लेखिका की इस बात के लिए सराहना की कि उन्होंने अपनी महिला पात्रों की दृढ़ता और आंतरिक शक्ति को प्रामाणिक रूप से चित्रित किया है.

प्रियंका भारद्वाज ने प्रदीप सिंह की ग्यारह कविताओं का रचनात्मक और रोचक सार प्रस्तुत किया. उन्होंने अपनी प्रस्तुति में कवि की विशिष्ट शैली और लय को अपनाया, जिससे कविता का मूलभाव श्रोताओं तक गहराई से पहुँच सका. उनकी प्रस्तुति ने न केवल कविताओं की भावनात्मक गहराई को सजीव किया, बल्कि श्रोताओं को सामाजिक सरोकारों और कलात्मक अभिव्यक्ति की परिवर्तनकारी शक्ति पर विचार करने के लिए भी प्रेरित किया. केशव चतुर्वेदी ने सत्य प्रकाश सिंह के लेख का गहन संदर्भ प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने कबीर और तुलसीदास का संदर्भ भी शामिल किया. इन संदर्भों के माध्यम से उन्होंने लेख में निहित दार्शनिक परतों और आध्यात्मिक स्वर-लहरियों को उजागर किया और इसकी बौद्धिक समृद्धि तथा सांस्कृतिक महत्व पर बल दिया.

कार्यक्रम का समापन शब्द बिरादरी की उस महत्त्वपूर्ण भूमिका की स्वीकृति के साथ हुआ, जो वह साहित्यिक और सामाजिक अभिव्यक्ति के एक जीवंत मंच के रूप में निभा रही है.

यह मंचन केवल पठन-पाठन को बढ़ावा देता है, बल्कि लेखकों को अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करने के सार्थक अवसर प्रदान करके और उनके मूल्यवान योगदानों को मान्यता देकर सृजनात्मकता का सक्रिय रूप से पोषण भी करता है. साहित्यिक उत्कृष्टता के उत्सव के माध्यम से, शब्द बिरादरी का उद्देश्य नवोदित और स्थापित दोनों प्रकार के लेखकों को प्रेरित और सशक्त करना है.

आगे की ओर दृष्टि रखते हुए, यह मंच अपने दायरे का विस्तार कर एक वैश्विक समुदाय के रूप में उभरने की आकांक्षा रखता है, जो दुनियाभर के रचनात्मक लेखकों और साहित्यकारों को जोड़कर अधिक सहयोग और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करेगा.

बचपन

रुद्राक्ष शर्मा

खुशियाँ बाज़ार में बिकती थी
बचपन में
बिकती थी गुड्डी के बाल में
जादू से उड़ते गुब्बरो में
हवा भरी गदाओं,
लकड़ी के तीर- कमान- तलवारो में
और हंसी निकलकर आती थी
कार्टून के मुखौटों के पीछे से

मन भर जाता था
चॉकलेट, चिप्स, कोल्ड ड्रिंक
मिल्कशेक, पानी - पताशे, आइसक्रीम से
और दिल में किसी और चीज़ के लिए
फिर जगह नहीं बचती थी

सस्ती बिकती थी ये खुशियाँ
गलियों बाज़ारों में
इसलिए आदत सी हो गई थी
इन्हे ख़रीद लेने की

आदत अब भी वही है
इसलिए सवाल उठते हैं मन में
की क्या ख़रीदी जा सकती है खुशियाँ
पर अब कीमत बढ़ गई है
जेब हमारी बढने पर भी
हैसियत खुशियों की ज्यादा हो गई है

अब तो बस याद रह गई है
अलमारी में उन बिखरे पलों की
और हम इकठ्ठा करते रहते हैं
जोड़ पल संघर्ष और दुख के
इसी अलमारी की तिजोरी में
कि एक दिन शायद इन्हीं से
खरीद लेंगे वो खुशी

जो बचपन में
हमें दिला दी जाती थी
आसानी से.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी